ध्यान सुमन – ज्ञान सुरभि

आत्मज्ञान रहित मनुष्य सुगन्ध विहीन पुष्प के समान है। सुगन्ध का अर्थ है – फूल का आभामण्डल। जितनी अधिक दूर तक सुरभि का विस्तार होगा उतनी ही उस फूल की महत्ता होगी।

प्रत्येक व्यक्ति की शक्ति, ज्ञान और चेतना निरन्तर बढ़ती रहनी चाहिए। इसके लिए ध्यान, स्वाध्याय और सज्जन संगति की आवश्यकता है।

शक्ति ध्यान करने से बढ़ती है, ज्ञान स्वाध्याय से वृद्धि पाता है और चतना का सज्जन संगति से विस्तार होता है।

प्रत्येक व्यक्ति को ये तीनों काम प्रतिदिन करने चाहिए। पिरामिड स्पिरिचुअल सोसायटी के प्रचार में ये ही मूल मंत्र है – ध्यान, स्वाध्याय और सज्जन संगति।

जिस व्यक्ति में इस प्रकार शक्ति, ज्ञान और चेतना बढ़ जाती है वह सुगंध युक्त पुष्प की भाँति हो जाता है। उसकी ख्याति सभी लोकों में फैल जाती है। उसकी सुरभि से सारी सृष्टि भर जाती है।

हर पिरामिड मास्टर ऐसी ज्ञान सुरभि से युक्त ध्यान सुमन के समान है। सारे देश को ज्ञान की खुशबू से भर जाना चाहिए।